❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

स्तोतुर्मघवन् काममा दृण।। ऋग्वेद 1/57/5

हे ऐश्वर्यशालिन् ! भक्त की कामनाओं को पूर्ण कर।

O the Bounteous Lord! fulfil all the good wishes and desirer of your devotees.

वर्ष 39, अंक 26 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 2 मई, 2016 से रविवार 8 मई, 2016
विक्रमी सम्वत् 2073 सृष्टि सम्वत् 1960853117
दयानन्दाब्द : 193 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महाकुम्भ में प्रचार कार्य जोरों पर

समयदानी आर्य कार्यकर्त्ता सहयोग हेतु पहुंचे – प्रकाश आर्य

सिंहस्थ कुम्भ मेला उज्जैन 21 मई तक चलेगा। सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री प्रकाश आर्य जी ने मेला स्थल पर आर्यसमाज के शिविर में पहुंचकर निरीक्षण किया तथा व्यवस्थाओं को देखा। उन्होंने आर्यसमाज के उत्साही कार्यकर्ताओं को मेले में सत्यार्थ प्रकाश एवं अन्य वैदिक साहित्य के प्रचार हेतु पहुंचने का अह्वान किया।

शिविर में आर्यसमाज एवं वैदिक धर्म के प्रचार हेतु भारत के विभिन्न भागों से वैदिक विद्वान एवं सन्यासीगण पधार रहे हैं। इस अवसर पर कच्छ से पधारे गुरुकुल भवानीपुर के आचार्य स्वामी शान्तानंद जी ने एवम् 116 वर्षीय स्वामी सर्वानंद सरस्वती जी ने अपने आशीर्वचन प्रदान किये।

शिविर में महिला सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए साध्वी उत्तमा

– शेष पृष्ठ 4 पर

दिल्ली के विद्यालयों से संस्कृत समाप्त करने का प्रयास

सभा द्वारा सरकार को कड़ा विरोध पत्र

दिल्ली के सरकारी विद्यालयों से संस्कृत एवं अन्य भारतीय भाषाओं को हटाने के समाचार हैं। हाल ही में दिल्ली सरकार द्वारा जारी पत्र से सभी विद्यालयों को सूचना दी गई है कि संस्कृत एवं अन्य भारतीय भाषाएं छठे विषय के स्थान पर सातवें विषय के रूप में पढ़ाई जाएं और उसके अंक भी जोड़ें नहीं जाएं। जिस विषय के अंक ही नहीं जोड़ें जाएंगे भला उसे कौन पढ़ना चाहेगा। स्पष्ट रूप दिल्ली सरकार संस्कृत को विषय के रूप में समाप्त करना चाहती है।

दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने कड़ा विरोध पत्र लिखते हुए मुख्यमन्त्री, उपमुख्यमन्त्री एवं शिक्षा मन्त्री दिल्ली सरकार से कहा है कि ऐसा कोई कार्य न किया जाए जिससे संस्कृत की गरिमा को ठेस पहुंचे। उन्होंने पत्र में यह भी कहा कि एक ओर तो दिल्ली सरकार के अन्तर्गत चलने वाली संस्कृत अकादमी संस्कृत के उत्थान के लिए नई-नई योजनाएं बनाने का कार्य देखती है तो दूसरी ओर दिल्ली सरकार का यह पत्र संस्कृत को समाप्त करने के लिए एक षड़यन्त्रकारी कदम दिखाई देता है। उन्होंने सरकार से इस पत्र को शीघ्र वापस लेने की मांग करते हुए आर्यजनता से कड़े विरोध पत्र भेजने का आहान किया। इसके साथ ही उन्होंने इस विषय में और अधिक कार्य करने की जरुरत पर बल देते हुए कहा कि यदि आवश्यकता हुई तो इसके लिए समस्त आर्यजनता की ओर से आन्दोलन एवं हस्ताक्षर अभियान भी चलाया जाएगा।

आखिर वैदिक सिद्धान्त मानना पड़ा मुस्लिम देश को

वेद की एक-एक बाद सास्वत् सत्य है। चाहे कोई माने या न माने। किन्तु एक दिन सत्य उजागर होता ही है। महर्षि दयानद ने वेद को आधार बनाते हुए स्पष्ट लिखा है कि विवाह सम्बन्ध माता-पिता के गोत्रों को छोड़कर दूरस्थ सम्बन्ध में होने चाहिएं। इसी बात को लम्बे समय पश्चात् निकट सम्बन्धों का नुक्सान देखते हुए एक बार फिर चीन, अफगानिस्तान, किर्गिस्तान और उज्बेकिस्तान के बीचों-बीच बसा मध्य एशियाई मुस्लिम देश ताजिकिस्तान से एक ऐसी ही खबर आई है जो मानवीय समाज में रिश्तों-नातों को मजबूत और पवित्र बनाने में सहयोग करती दिखाई दे रही है। उन्होंने रक्त सम्बन्धियों में विवाह सम्बन्ध बनाने के विरुद्ध कानून बनाया है। जनवरी माह में ताजिकिस्तान सरकार ने अपने देश में इस्लामिक आतंक की आहट को रोकने के लिए करीब 13 हजार पुरुषों की दाढ़ी कटवा दी थी। हजारों लड़कियों को बुर्के से आजाद किया था और इस्लामिक परिधान बेचने वाली की दुकानों को प्रतिबंधित किया था। यहाँ की सरकार का मानना है कि इसके अलावा इस्लामिक अतिवाद को रोकने का और कोई चारा नहीं है लेकिन अबकी वहां की सरकार ने जो कदम उठाया, वह वाकई इस्लामिक राष्ट्रों के अलावा भारत जैसे देशों को भी सोचने पर मजबूर कर देगा। बीते महीने यहां की संसद का एक फैसला अन्तर्राष्ट्रीय सुर्खियों में शामिल हुआ। यह फैसला था देश में सजातीय (Consanguineous) विवाह यानि कि रक्त सम्बन्धियों के विवाह पर प्रतिबंध लगाना सही है। दुनिया के कई देशों, विशेषकर मुस्लिम बहुल देशों में सजातीय (Consanguineous) विवाह बहुत ही आम प्रथा है। इसीलिए जब मुस्लिम बहुल ताजिकिस्तान ने इस प्रथा पर रोक लगाने का प्रगतिशील फैसला लिया तो इसने दुनिया भर के कई लोगों को हैरत में डाल दिया।

– शेष पृष्ठ 8 पर

धवस्त किए गए आर्यसमाज डी.सी.एम. रेलवे कोलोनी (निकट बाड़ा हिन्दूराव) के

नव निर्मित भवन का उद्घाटन समारोह

रविवार दिनांक 15 मई, 2016 | यज्ञ : सायं 4 :30 बजे | उद्घाटन : 5:30 बजे

आपको विदित ही है कि गत वर्ष 16 मई, 2015 को आर्य समाज डी.सी.एम. रेलवे कॉलोनी गिरा दिया गया था, जिसको पुनः स्थापित करने की मांग को लेकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं विभिन्न आर्य समाजों द्वारा संयुक्त रूप से धरना-प्रदर्शन किया गया था। आर्य समाज को पुनः स्थापित करने के लिए आर्य समाज भवन का पुनरुद्धार कार्य आरम्भ किया गया और एक साल के अन्दर ही इस आर्यसमाज का नया भवन बनकर तैयार हो गया है।

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में आर्य समाज डी.सी.एम. रेलवे कॉलोनी पहुंचकर कार्यक्रम को सफल बनाएं तथा संगठन शक्ति का परिचय दें

निवेदक

धर्मपाल आर्य, प्रधान, दिल्ली आ.प्र.सभा
अरुण प्रकाश वर्मा 9540086759 | सुभाष कोहली 9540021717 | वागीश आर्य 9810068474 — आर्यसमाज डी.सी.एम. रेलवे कालोनी पुनर्निर्माण समिति
अमरनाथ गोगिया, प्रधान | आदर्श कुमार, मन्त्री, 9811440502 — आर्यसमाज मॉडल बस्ती शीदीपुरा

पहुंचने का मार्ग :- डी.सी.एम. चौक से गौशाला रोड पर चलकर पहले गेट से अन्दर आर्यसमाज पहुंचे।

वेद-स्वाध्याय

वह सर्व हितकारी है

इन्द्रश्च मृत्याति नो न नः पश्चादघं नशत्। भद्रं भवाति नः पुरः।। ऋ. 2/41/11
ऋषिः गृत्समदः।। **देवताः** इन्द्रः।। **छन्दः** गायत्री।।

शब्दार्थ- इन्द्रः=परमेश्वर **च**=निश्चय से **नः**=हमें **मृलयाति**=सुख ही देते हैं। **नः**=हमारे **पश्चात्**=पीछे **अघं** पाप **न नशत्**=न लगे तो **नः पुरः**=हमारे सामने **भद्रम्**=भद्र, कल्याण ही **भवाति**=होवे, होता रहे।

विनय - भाइयो! इसमें सन्देह नहीं है कि इन्द्र भगवान् तो हमें सदा सुख ही दे रहे हैं, निरन्तर हमारा कल्याण ही कर रहे हैं, फिर भी जो असुख हमारे सामने आता है, हमें दु:ख देखना पड़ता है, उसका कारण यह है कि हमने पाप को अपने पीछे लगा रक्खा है और पाप का परिणाम दु:ख होना अटल है, अनिवार्य है। यदि हमारे पीछे पाप न लगा हो तो हमारे सामने भद्र-ही-भद्र आता जाए। जब हम कोई पाप करते हैं तो समझते हैं कि वह वहीं समाप्त हो गया। हम समझते हैं कि दो घण्टे पहले किया हुआ हमारा पाप दो घण्टे पूर्व उसके कर्म के साथ ही समाप्त हो चुका, अब उसका हमसे कुछ सम्बन्ध नहीं। इस प्रकार हम पाप करके आगे चलते जाते हैं और चाहते तथा आशा करते हैं कि आगे-आगे हमारे लिए भद्र-ही-भद्र आता जाए, परन्तु हमें मालूम रहना चाहिए कि हमारा किया हुआ पाप चाहे हमारी आंखों के सामने नहीं आ खड़ा होता हो, परन्तु वह नष्ट भी नहीं होता। वह तो हमारे पीछे लग जाता है और तब तक हमारा पीछा नहीं छोड़ता जब तक वह हमारे आगे अभद्र, अकल्याण व दु:ख के रूप मे आकर हमें फल नहीं भुगा लेता, अत: याद रखिए कि हमें न दिखाई देता हुआ हमारे पीछे रहता हुआ ही हमारा पाप एक दिन हमारे आगे अभद्र व क्लेश के रूप में आता है और अवश्य आता है, जैसे हमारा प्रत्येक पुण्य भी पीछे रहता हुआ, दिखाई न देता हुआ एक दिन हमारे आगे भद्र के रूप में आता है। यह हमारी कितनी मूर्खताभरी इच्छा है कि हम चाहते हैं हमारा सदा भला ही होवे, हमारे सामने सदा सुख, स्वास्थ्य, समृद्धि आदि ही आते जाएं, परन्तु साथ ही हम पाप करना भी नहीं छोड़ना चाहते! यह कैसे हो सकता है? हमारे पीछे तो हमारा नाश करता हुआ, हमारा पाप चल रहा होता है और हम मूर्खतापूर्ण आशा में यह प्रतीक्षा करते होते हैं कि हमारे सामने सुख आता होगा। यह असम्भव है, अत: आओ, आज से हम कम-से-कम आगे के लिए पाप करना तो सर्वथा त्याग दें। यदि हम विशेष पुण्य नहीं कर सकते तो कम-से-कम इतना तो संङ्कल्प कर लें कि हम अब से एक भी पाप अपने से न होने देंगे। इतना करने से भी इन्द्र भगवान् की दया से हमारे सुदिन शीघ्र ही आ जाएंगे, पाप का पीछा छूट जाने से भद्र के लिए मार्ग साफ़ हो जाएगा, पर यदि हम इतना भी न कर सकें तब तो इन्द्रदेव की सुख व कल्याण की वर्षा में रहते हुए भी हमारे भाग्य में तो दु:ख-ही-दु:ख रहेगा। ***साभार - वैदिक विनय***

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित हेतु मो. नं. 9540040339 सम्पर्क करें।

सम्पादकीय

पाठ्य पुस्तकों में शहीदों को आतंकवादी की संज्ञा : कब जागेगा शिक्षा मंत्रालय!

शहीद भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद तथा रामप्रसाद बिस्मिल जैसे क्रांतिकारियों ने राष्ट्र की आजादी के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए और पुस्तक में उन्हें आतंकवादी के रूप में पढ़ाया जा रहा है। इस तरह का शर्मनाक उदाहरण पूरे विश्व के इतिहास में मिलना कठिन है। आजाद भारत के 68 साल बाद भी शहीद भगत सिंह को आतंकवादी कहा जा रहा है। विश्वास तो नहीं होता है। लेकिन दिल्ली विश्वविद्यालय (डीयू) के हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय की ओर से प्रकाशित 'भारत का स्वतंत्रता संघर्ष' पुस्तक में एक पूरे अध्याय में भगतसिंह राजगुरु और सुखदेव को क्रांतिकारी शहीद का दर्जा नहीं दिया गया है बल्कि साफ शब्दों में आतंकवादी कहकर संबोधित किया गया है। इस पुस्तक में संशोधन की लम्बे समय से मांग कर भगतसिंह के छोटे भाई सरदार कुलवीर सिंह के पोते यादवेन्द्र सिंह ने केन्द्रीय मंत्री स्मृति ईरानी को पत्र लिखा है कि हम सब आहत है, इस शब्द को हटाया जाये। सब लोगों को जानकर हैरानी होगी कि इस पुस्तक के लेखक प्रसिद्ध इतिहासकार विपिन चंद्र, मृदुला मुखर्जी, आदित्य मुखर्जी व सुचेता महाजन ने मिलकर लिखा है।

अजीब विडम्बना है 1990 में पुस्तक का पहला संस्करण छपा था लेकिन तमाम विरोध के बावजूद भी आज तक कोई सरकार संशोधन नहीं करा पाई। यह एक अकेली पुस्तक नहीं है। कुछ साल पहले आगरा से प्रकाशित माडर्न इंडिया नाम की पुस्तक जिसके लेखक कोई के. एल. खुराना थे; उन्होंने भी पुस्तक में लिखा है कि उनमें से बहुतों ने हिंसा का मार्ग अपना लिया और वे आतंकवाद के जरिये भारत को स्वतंत्रता दिलाना चाहते थे। महत्वपूर्ण बात यह है कि इस पुस्तक का बड़ी संख्या में उपयोग बी.ए.,एम.ए. के विद्यार्थियों के अलावा प्रशासनिक सेवा परीक्षा में बैठने वाले करते हैं।

शहीद-ए-आजम भगत सिंह सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि पाकिस्तान के लोगों और बुद्धिजीवियों के बीच भी काफी लोकप्रिय हैं। भारत की तरह ही पाकिस्तान में भी भगत सिंह की लोकप्रियता में कोई कमी नहीं है। लाहौर में भगत सिंह के गांव के लिए जहां से सड़क मुड़ती है वहां भगत सिंह की एक विशाल मूर्ति लगी है। करांची की जानी मानी लेखिका जाहिदा हिना ने अपने एक लेख में उन्हें पाकिस्तान का सबसे महान शहीद करार दिया है। 1947 में देश का बंटवारा हुआ और अलग पाकिस्तान बन गया लेकिन वहां के लोगों के दिलों में भगत सिंह जैसी हस्तियों के लिए सम्मान में जरा भी कमी देखने को नहीं मिलती। आखिर भारत सरकार की ऐसी कौनसी मजबूरी है जो आतंकियों का सम्मान और शहीदों का अपमान होता है। यह दंश केवल भगतसिंह ही नही पश्चिम बंगाल के स्कूली पाठ्यक्रम में स्वतंत्रता आंदोलन के शहीदों खुदीराम बोस, जतीन्द्रनाथ मुखर्जी, प्रफुल्ल चंद्र चाकी को आतंकवादी बताया जाता है। क्या सरकारें जान बूझकर देश के लिए मर मिटने वालों को अपमानित करना चाहती हैं जिस तरह कुछ पार्टियाँ आज देश के दुश्मनों को तो शहीद बता रही है उसे सुनकर देश पर मरने मिटने वालों की आत्मा क्या कहती होगी? केरल चुनाव में कांग्रेस नीत गठबंधन यू.डी.एफ. सद्दाम हुसैन और अफजल के नाम पर उनकी फांसी के पोस्टर दिखाकर वोट मांग रही थी। क्या यह पार्टियाँ की सोच बन गयी है कि देश के अन्दर भगतसिंह, राजगुरु, अशफाक उल्लाखां की फांसी और युद्ध में शहीद वीर अब्दुल हमीद के नाम पर वोट नहीं मिलेंगे?

असल सवाल यह है कि क्या आजादी के इतने वर्षो बाद भी हम एक ऐसे भारत का निर्माण नहीं कर पाए जिसमे कम से कम देशभक्तों और देश की खातिर बेमिसाल बलिदान देने वाले दीवानों के देश को लेकर देखे स्वप्न तो दूर की बात, राष्ट्रीय स्तर पर उनका सम्मान कर पाए? क्या कोई सरकार देश पर न्योछावर होने वाले वीरों को सम्मान दिला पायेगी? आतंकी ओसामा बिन लादेन का उल्लेख ओसामा जी के नाम से करने वाले दल अपने सत्ताकाल में हुतात्मा भगतसिंह एवं राजगुरु के आतंकी होने की बात इतिहास की पुस्तकों में समावेशकर बच्चों को क्या सिखा रहे थे! देश के लिए मरने-मिटने वाले आतंकी होते हैं और सत्ता की कुर्सी पर बैठकर मरने वाले शहीद! इन शरीदों को हमेशा अपमानित करने वाले आज फिर, कन्हैया को भगतसिंह कहकर पुन: सारे देशभक्तों का अपमान कर रहे थे ! अगर शहीदों के साथ इस देश में ऐसे ही सलूक होते रहे तो कौन माँ अपने बच्चों को भगतसिंह, आजाद, करतार सिंह सराभा, सावरकर इत्यादि बनने की प्रेरणा देगी?

बोध कथा

फूल मैं चुनने आया था बागे हयात में

एक थे सज्जन जीवनराम। ये सेठ ज्योति स्वरूप के पड़ोस में रहते थे-एक झोंपड़े में। उन्हें पता लगा कि सेठ के बहुत से उत्तम मकान है। उनके पास जाकर वे बोले-'' अमुक मकान मुझे दे दीजिये, मैं वहां निर्धन बच्चों के लिए एक पाठशाला आरम्भ करूंगा। एक नि:शुल्क औषधालय बनाऊंगा और प्रतिदिन सत्संग होगा। वहां आध्यात्मिक कथाएं होंगी, यज्ञ होगा। जो भी किराया आप मांगेंगे, मैं दे दूंगा।''

ज्योति स्वरूप बोले-''तुम तो बहुत अच्छे व्यक्ति हो। इतने श्रेष्ठ काम तुम मेरे मकान में करोगे तो मैं नि:शुल्क दूंगा। किराया नहीं लूंगा। तुम मकान को स्वच्छ रखो। ये उत्तम काम करो। मुझे किराये की आवश्यकता नहीं।''

जीवनराम पहुंचे उस मकान में। वहां रहने लगे। आरम्भ में उन्होंने मकान को स्वच्छ रखा, परन्तु कुछ ही दिन व्यतीत हुए थे कि जीवनराम के कुछ जुआरी मित्र आ गये। पहले ताश शुरु हुई, फिर जुआ खेला जाने लगा। प्रतिदिन जुआ होता, तो शराब भी उड़ने लगी। धीरे-धीरे वह मकान डाकुओं का अड्डा बन गया। हर प्रकार के पाप वहां होने लगे। किसी ने ज्योति स्वरूप से शिकायत की-''सेठ जी! जो मकान आपने यज्ञ और सत्संग के लिए दिया था, वह तो डाकुओं का अड्डा बन गया है।''

ज्योति स्वरूप बोले-''ऐसी बात है?'' शिकायत करने वाले ने कहा-''जी! मैं अपनी आंखों से देखकर आया हूं।''

ज्योति स्वरूप ने अपने मुनीम को बुलाया; कहा-''जीवनराम से कहो कि मकान खाली कर दे। हमने पाप के लिए वह मकान नहीं दिया था।''

छोटे मुनीम जीवनराम के पास पहुंचे। जीवनराम ने कुछ अनुनय-विनय की। कुछ मुनीम साहब का हाथ गर्म कर दिया। उन्होंने जाकर रिपोर्ट दे दी-''सब ठीक है। किसी ने अनुचित शिकायत कर दी थी।''

अभी बहुत देर नहीं हुई थीकि सेठ के पास पुन: शिकायत पहुंची। अब के उन्होंने बड़े मुनीम को भेजा। जीवनराम ने बड़े मुनीम की अनुनय-विनय की। प्रतिज्ञा की कि वह अपना सुधार करेगा। बड़े मुनीम ने सारी रिपोर्ट दे दी। सेठ ज्योति स्वरूप बोले-''बात बड़ी है, परन्तु यदि वह सुधरना चाहता है, तो उसे कुछ समय देना चाहिए।'' कुछ समय दिया गया। परन्तु फिर शिकायत आई कि जीवनराम के लक्षण पहले से भी बुरे हुए जाते हैं। अब के सेठ ने अपने बेटे को भेजा। जीवनराम ने उसे भी धोखा देने का प्रयत्न किया, परन्तु वह धोखे में नहीं आया। वकील से नोटिस दिला दिया कि ''मकान खाली करो।'' मुकद्दमा हुआ। वारण्ट जारी हुए। पुलिस पहुंची तो जीवनराम ने उसको भी रिश्वत देने का प्रयत्न किया, परन्तु अब कोई भी चाल चली नहीं। रोया-चिल्लाया। अन्त में मकान छोड़ना पड़ा।

यह जीवनराम है आत्मा, ज्योति स्वरूप है ईश्वर और मकान है शरीर। इस मकान का कोई किराया नहीं। इसीलिये मिला यह मकान। ज्ञान के द्वारा कर्म, कर्म के द्वारा उपासना और उपासना द्वारा प्रभु का दर्शन करो। उसके स्थान पर बना दिया इसको पापों का अड्डा। तब छोटा मुनीम आया-कोई छोटी बीमारी-छोटी दुर्घटना। बड़ा मुनीम है- तनिक बड़ा रोग। सेठ का लड़का है अधिक भयानक रोग। नोटिस है-हृदय की दुर्बलता, अन्तड़ियों का कार्य न करना, आंखों में मोतियाबिंद उतरना, कानों से कम सुनाई देना। नर्व्स ब्रेकडाउन मुकद्दमा है। अन्तिम रोग वारण्ट है। पुलिस है मृत्यु। वह आ जाये तो फिर औषधियों की रिश्वर नहीं चलती। तब जीवनराम को यह मकान छोड़ना ही पड़ता है।

मैं फूल चुनने आया था बाग़े-हयात में।
दामन को ख़ार-ज़ार में उलझा के रह गया।।

काशी शास्त्रार्थ के दो प्रमुख पौराणिक विद्वान पण्डितों का परिचय

काशी शास्त्रार्थ काशी में 16 नवम्बर सन् 1869 को आनन्द बाग में काशी नरेश श्री ईश्वरी नारायण सिंह की अध्यक्षता व पचास हजार के जनसमूह की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ था।

-मनमोहन कुमार आर्य

महर्षि दयानन्द मथुरा में प्रज्ञाचक्षु गुरु विरजानन्द सरस्वती से अध्ययन कर देश व संसार से अज्ञान मिटाने के लिए सन् 1863 में कर्म क्षेत्र में प्रविष्ट हुए थे। उन्होंने वेद और वैदिक साहित्य का अध्ययन कर आध्यात्म व भौतिक पदार्थों सहित सामाजिक ज्ञान आदि अनेकानेक विषयों का निर्भ्रान्त ज्ञान प्राप्त किया था। उनके समय में देश धार्मिक, सामाजिक व राजनैतिक दृष्टि से अज्ञान व अन्धविश्वासों सहित परकीयों की दासता से ग्रसित था। इसका प्रमुख कारण भारत में वैदिक धर्म में आयी विकृतियां, अज्ञान व अन्धविश्वास सहित कुरीतियां व पाखण्ड आदि थे। इसके अन्तर्गत मूर्तिपूजा, अवतारवाद, फलित ज्योतिष, जन्मना जाति व्यवस्था, मृतक श्राद्ध, बाल विवाह, बहु विवाह, अनाचार, सामाजिक असमानता, धर्म के नाम पर अनुचित परम्पराओं का प्रचलन आदि बहुत से कारण थे। धर्म का आदि मूल वेद है, इस तथ्य को सभी पौराणिक विद्वान भी स्वीकार करते थे। **अतः वेदों का सूक्ष्म अध्ययन कर स्वामी दयानन्द ने घोषणा की कि मूर्तिपूजा वेदों के विरुद्ध है।** पौराणिकों द्वारा इसे स्वीकार न करने पर वह काशी जा पहुंचे और उन्होंने काशी के दिग्गज पण्डितों को वेदों में मूर्तिपूजा का विधान सिद्ध करने की चुनौती दी। फलस्वरूप काशी के आनन्द बाग में पचास हजार लोगों की उपस्थिति में 16 नवम्बर, 1869 ई. में स्वामी दयानन्द का काशी के शीर्षस्थ लगभग 40 पण्डितों से काशी के राजा श्री ईश्वरी नारायण सिंह की मध्यस्थता में शास्त्रार्थ हुआ। काशी के प्रमुख दो दिग्गज पण्डितों में स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वती और पं. बालशास्त्री का नाम उल्लेखनीय हैं। इस लेख में आज हम इन दोनों विद्वानों का परिचय प्रस्तुत कर रहे हैं जिससे वर्तमान पीढ़ी प्रायः अविदित ही है। इस काशी शास्त्रार्थ में पौराणिक पण्डितों द्वारा मूर्तिपूजा वेदानुकूल व वेदविहित सिद्ध न की जा सकी। इस शास्त्रार्थ का पूरा विवरण पुस्तकों में उपलब्ध है जिसे इच्छुक पाठक वहां देख सकते हैं।

काशी शास्त्रार्थ में पौराणिक मत का प्रतिनिधित्व मुख्यतः **स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वती** ने किया। उनका जन्म सन् 1820 ई. में उत्तर प्रदेश के सीतापुर जिले के वाडी नामक ग्राम में हुआ था। स्वामी विशुद्धानन्द स्वामी दयानन्द से लगभग 5 वर्ष बड़े थे। इनके पिता पं. संगम लाल शुक्ल कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। विशुद्धानन्द जी का बचपन का नाम वंशीधर था। 18 वर्ष की आयु का होने पर इन्होंने निजाम हैदराबाद में सैनिक का पद स्वीकार किया था परन्तु कुछ समय बाद तीव्र वैराग्य होने पर नौकरी से त्याग पत्र देकर देश के तीर्थों की यात्रा करने निकल पड़े। अनेक तीर्थ स्थानों का भ्रमण करने के बाद आप काशी आये और काशी के अहिल्याबाई घाट पर निवास करने वाले संन्यासी गौड़ स्वामी के शिष्य बन गये। उन्हीं से आपने संन्यास की दीक्षा ली और इस नये आश्रम का नया नाम स्वामी विशुद्धानन्द धारण किया। सन् 1859 में गौड़ स्वामी के निधन के पश्चात् स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वती ही उनकी गद्दी के अधिकारी हुए। इनके शिष्यों में सनातनधर्म के उपदेशक पं. दीनदयालु शर्मा, महामहोपाध्याय पं. शिवकुमार शास्त्री तथा महामहोपाध्याय पं. प्रमथ नाथ भट्टाचार्य के नाम उल्लेखनीय हैं। मीमांसा दर्शन तथा अद्वैत-वेदान्त में आपकी विशेष गति थी। मठाधीश व संन्यासी होने पर भी आपके भौतिक ऐश्वर्य तथा ठाठ-बाट में कोई कमी नहीं रहती थी। स्वामी दयानन्द, स्वामी विशुद्धानन्द को काशी के विद्वानों में प्रमुख विद्वान मानते थे और चाहते थे कि उनके द्वारा प्रवर्तित वेद प्रचार व धर्मान्दोलन के महत्त्वपूर्ण कार्य में स्वामी विशुद्धानन्द जी उनके साथ सहयोग करें। दूसरी ओर स्वामी विशुद्धानन्द को लोकहित तथा समाज के उत्थान व सुधार में कोई विशेष रुचि नहीं थी। अतः वह स्वामी दयानन्द के प्रस्ताव को स्वीकार करने में समर्थ नहीं थे। स्वामी विशुद्धानन्द के लेखकीय कार्यों में उनकी एकमात्र कृति **'कपिल गीता की व्याख्या'** (प्रकाशन काल विक्रमी सं. 1946 (1889 ई.) का पता चलता है। सन् 1898 ई. में आपकी मृत्यु काशी में हुई।

पण्डित बालशास्त्री राना डे महाराष्ट्रीय चित्तपावन ब्राह्मण थे। इनके पिता पं. गोविन्द भट्ट कोंकण प्रदेश से आकर काशी में रहने लगे थे। बालशास्त्री का जन्म 1816 विक्रमी (सन् 1839 ईस्वी) पौष कृष्ण 10 सोमवार को काशी में हुआ। इनका मूल नाम विश्वनाथ था परन्तु यह बालशास्त्री के नाम से ही जाने जाते थे। सन् 1864 ईस्वी में आपको काशी के राजकीय संस्कृत कालेज में सांख्य-शास्त्र के अध्यापक पद पर नियुक्त किया गया। यह नियुक्ति कालेज के तत्कालीन प्रिंसिपल श्री ग्रिफिथ ने की थी। पं. बालशास्त्री का अध्ययन अत्यन्त गम्भीर तथा विस्तृत था। काशी के प्रसिद्ध विद्वान पं. राजाराम शास्त्री आपके गुरु थे। सन् 1880 ईस्वी में आपने काशी में शास्त्रीय विधि से ज्योतिष्टोम यज्ञ सम्पन्न किया था। महर्षि दयानन्द और काशी पण्डितों के बीच 16 नवम्बर, सन् 1869 को हुए मूर्तिपूजा पर शास्त्रार्थ के समय आपकी आयु 30 वर्ष की थी और आप पौराणिक पक्ष के एक मुख्य प्रवक्ता थे। पं. बालशास्त्री ने तीन विवाह किये परन्तु उन्हें सन्तान की प्राप्ति नहीं हुई। अतः उन्होंने विष्णु दीक्षित नामक एक ब्राह्मण बालक को अपना दत्तक पुत्र बनाया था। सन् 1882 ई. में 43 वर्ष की आयु में आप अर्ष रोग से पीड़ित होकर परलोक सिधार गये।

हमने लेख में स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वती तथा पं. बालशास्त्री जी के विषय में जो जानकारी दी है उसका आधार आर्यजगत के वयोवृद्ध विद्वान डॉ. भवानीलाल का मासिक वेदवाणी पत्रिका के मार्च, 1985 में प्रकाशित लेख है जो आपने पत्रिका के सम्पादक पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी की प्रेरणा से लिखा था। आपका आभार एवं धन्यवाद है। इस जानकारी से काशी शास्त्रार्थ के दो प्रमुख पौराणिक विद्वानों का किंचित परिचय सुलभ हो सका है। हम आशा करते हैं कि हमारे विद्वान व पाठक इस जानकारी को उपयोगी पायेंगे। यह ध्यातव्य है कि काशी के शास्त्रार्थ ने मूर्तिपूजा को मिथ्या सिद्ध किया था। आज भी किसी के पास ईश्वर का अवतार लेने, मूर्ति में प्राण प्रतिष्ठा की यथार्थता और मूर्तिपूजा की प्रमाणिकता पर कोई वेद का प्रमाण नहीं है। इस दृष्टि से काशी शास्त्रार्थ सहित स्वामी दयानन्द व उपर्युक्त दो पौराणिक विद्वानों का ऐतिहासिक महत्व है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक

रविवार 8 मई, 2016 मध्याह्न 3:00 बजे

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अत्यावश्यक अन्तरंग सभा बैठक दिनांक 8 मई, 2016 को आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली- 1 में मध्याह्न 3:00 बजे आहूत की गई है। सभा के समस्त अधिकारियों, अन्तरंग सदस्यों एवं विशेष आमन्त्रित सदस्यों से निवेदन है कि बैठक में अवश्य ही पहुंचकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराएं एवं निर्णयों में अपनी भागीदारी प्रस्तुत करें।

निवेदक :- **धर्मपाल आर्य** (प्रधान) **विनय आर्य** (महामन्त्री)

सभा द्वारा संचालित कक्षाः आर्यजन तत्काल पंजीकरण कराएं

वेद मन्त्र पाठ कक्षा

दिनांक : 7 मई 2016 से प्रति शनिवार सायं 4:30 से 6 बजे

स्थान : आर्य समाज जनकपुरी सी-3, जनकपुरी, नई दिल्ली-110058

अध्यापन : आचार्य प्रणवदेव शास्त्री

सम्पर्क : शिव कुमार मदान (9310474979), श्री अजय तनेजा (9811129892)

प्रशिक्षण के उपरान्त सभी प्रशिक्षुओं को प्रमाण पत्र प्रदान किए जाएंगे।

प्रेरक प्रसंग

शुभ कार्य शुभ ही है

निजाम की पुलिस, निजाम की सेना तथा उसके रज़ाकार योजनावद्ध ढंग से निरन्तर हिन्दुओं की हत्याएं व लूटपाट कर रहे थे। हिन्दुओं का दोष केवल यही था कि वे हैदराबाद को स्वतन्त्र भारत के तत्कालीन गृहमंत्री सरदार पटेल से मिलकर आग्रह करते रहे कि राज्य के देशभक्त हिन्दुओं की रक्षा की जाए। सरदार पटेल इसके लिए स्वयं बड़े चिन्तित थे, परन्तु नेहरू जी को सरदार पटेल के चिन्तित होने में भी साम्प्रदायिकता की गन्ध आती थी। नेहरू जी इस कार्य को भी लटकाना चाहते थे। लटकाने का अर्थ उलझाना निकल आता, यदि सरदार पटेल पुलिस एक्शन न करते।

सरदार पटेल ने 13 सिम्बर के दिन सेना को राज्य पर चढ़ाई करने का आदेश दिया। भारत के उस समय के सेनापति जनरल बलशूर ने सरदार को कहा 13 का अंक अशुभ है, अतः 14 सितम्बर को चढ़ाई की जाए। अपने निश्चय से न टलने वाले लौहपुरुष पटेल ने कहा, 'गुजरात में 13 का अंक शुभ माना जाता है तथापि यदि आपको आपत्ति है तो चढ़ाई 12 को की जाए।'

पाठक! यह तथ्य नोट कर लें कि यदि चढ़ाई 13 को न की जाती तो कई उलझनें पैदा हो जातीं। मन्त्री परिषद् के गुप्त निर्णय की सूचना किसी देशद्रोही से निजाम को मिल गई। 13 को ही हैदराबाद से शोलापुर को आने वाली सड़क के पुल निजाम की सेना ने उड़ा देने थे। सरदार की तत्परता से नलदुर्ग में निजाम की जीप पकड़ी गई। इसमें पुल उड़ाने वाली विस्फोटक सामग्री सहित निज़ाम के अधिकारी व सैनिक भारतीय सेना ने पकड़ लिये। उन्हें विश्वस्त सूत्रों से पता चल चुका था कि भारतीय सेना 15 सितम्बर को चढ़ाई करेगी। दूरदर्शी पटेल ने देश का कितना हित किया। तीन दिन में निज़ाम राज्य परास्त हो गया। यदि पुल उड़ा दिये जाते तो हैदराबाद भी एक समस्या बनकर संयुक्त राष्ट्र संघ में वाद-विवाद व प्रस्तावों का विषय बन जाता।

सरदार पटेल ने सेना को आदेश दिये कि सब दिशाओं से चढ़ाई करते हुए पण्डित रुद्रदेवजी- जैसे आर्यवीरों से मार्गों का पूरा विवरण लेकर सेना आगे बढ़े।

-: साभार :-

तड़प वाले तड़पाती जिनकी कहानी

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी* : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित हेतु मो. नं. 9540040339 सम्पर्क करें।**

यात्रा वृतान्त

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री प्रकाश आर्य जी की ऑस्ट्रेलिया प्रचार यात्रा

इस आस्ट्रेलिया यात्रा में धर्म प्रचार की दृष्टि से आमन्त्रित किया गया था। इस कारण 23 मार्च 2016 को दिल्ली से सिडनी के लिए हवाई जहाज से रवाना हुआ, 24 मार्च की सुबह 9-30 बजे सिडनी पहुंचा। सिडनी में एयरपोर्ट पर श्री योगेश आर्य लेने के लिए आए थे। उनके साथ निवास स्थल पर पहुंचा, वहीं मेरे ठहरने की व्यवस्था बहुत अच्छी और स्वतन्त्र कक्ष में की गई। 25 मार्च को युवाओं के साथ चर्चा की। अलग से यह कार्यक्रम आयोजित किया गया था। इसमें सभी युवाओं (लड़के और लड़कियों) ने भाग लिया। शेनमार्क सभा के प्रधान श्री जगदीश जी साथ में थे। इस चर्चा में अनेक प्रश्न पूछे गए, कुछ उपदेशात्मक चर्चा भी की।

रात्रि 7 बजे से 9 बजे तक उपदेश का कार्यक्रम शेनमार्क आर्य समाज स्थल पर रखा गया। अच्छी उपस्थिति थी। माईक व्यवस्था ठीक थी, संगत के लिए तबले की व्यवस्था थी। रात्रि में 2 घण्टे से अधिक कार्यक्रम चला। कार्यक्रम में उपदेश व भजन दोनों की प्रस्तुति हुई। श्रोताओं ने बहुत पसन्द किया तथा बड़े ध्यान से सुना, बाद में लगभग प्रत्येक व्यक्ति ने आकर मुझसे भेंट की तथा कार्यक्रम को बहुत अच्छा बताते हुए अभूतपूर्व कहा। (वैसे किसी के द्वारा अपने कार्य की प्रशंसा सुनना प्रत्येक को अच्छा लगता है, इस दृष्टि से मेरे प्रयास से सामान्य जन सन्तुष्ट हैं, आनन्द ले रहे हैं यह तो ठीक लगा, किन्तु साथ ही यह दु:ख हुआ कि आर्य समाज में श्रोता व वक्ताओं का स्तर कैसा हो गया। मेरे जैसे साधारण ज्ञान रखने वाले व्यक्ति को अद्‌भुत और अभूतपूर्व कहकर प्रशंसा करना हमारे स्तर की स्थिति को दर्शाता है। यह मन को दु:खी भी करता रहा।) दूसरे दिन फिर सायं 7 से 9 उपदेश व भजन हुए, तीसरे दिन रविवार था, प्रात: 10 से 12-30 तक का समय मुझे दिया।

उपस्थिति प्रतिदिन की अपेक्षा और अच्छी थी, इन दिनों में भी श्रोताओं की वही भावना व्यक्त होती रही। बहुत सराहा वृद्धजनों ने आशीर्वाद देकर अत्यन्त प्रशंसा की। मुझे लगा कि मेरी योग्यता से बहुत अधिक मूल्यांकन हो रहा है। मन में विचार करता रहा कि क्या वास्तव में मेरा प्रयास ऐसा ही है क्या? उसका स्तर ऐसा है जो सारे व्यक्ति इतना प्रसन्न हो रहे हैं, बार-बार तारीफ कर रहे हैं? वैसे मुझे कार्यक्रमों में पहले भी सराहा गया, किन्तु जितना सम्मान व सराहना यहां मिली, उसकी कल्पना भी मैंने कभी नहीं की थी। मेरे लिए उनका इतना भाव विभोर होना एक सुखद आश्चर्य था, अकल्पनीय था, साथ ही एक चिन्ता भी थी। किन्तु इतना लाभ अवश्य हुआ, जिससे सदस्यों में एक स्फूर्ति व चेतना का संचार हुआ, आर्य समाज के कार्य को गति मिली, यह मेरा और सभी पदाधिकारियों का मानना रहा।

चौथा कार्यक्रम : सभा द्वारा अलग से एक हॉल में आयोजित किया गया। इसमें आर्य समाज के सदस्यों के अतिरिक्त अन्य सनातनधर्मी भी उपस्थित हुए। यहां डेढ़ घण्टे का समय निर्धारित किया गया।

उसी प्रकार यहां भी सभी ने इस कार्यक्रम की बहुत प्रशंसा की। कई व्यक्तियों ने पूर्व के तीन दिनों के कार्यक्रम में न आ पाने का अफसोस किया।

इसमें आस्ट्रेलिया विश्व हिन्दू महासभा के प्रमुख डॉ. निहाल सिंह जिन्हें आस्ट्रेलिया सरकार ने एक महत्वपूर्ण सम्मानजनक पद से सम्मानित किया है, उन्होंने ऐसे कार्यक्रम की आवश्यकता बताते हुए प्रशंसा की एवं आगे पुन: इसी प्रकार के बड़े स्तर पर कार्यक्रम आयोजन करवाने का कहा। सिडनी की इस प्रचार यात्रा में नवयुवकों की उपस्थिति, पदाधिकारियों की सक्रियता और कार्यक्रम के प्रति भावनाओं से यहां आर्य समाज को गति मिलना निश्चित है। श्री जगदीश जी, योगेश जी, बृजपाल सिंह जी, प्रमोद आर्य जी और भी अनेक सहयोगी है। पुन: बड़े स्तर पर आयोजन की रूपरेखा बनाने का निर्णय लिया है। कार्यक्रम का प्रभाव इतना था कि कुछ व्यक्ति सिडनी से काफी दूरी पर स्थित अन्य शहर ब्रिसबेन व मेलबर्न में भी कार्यक्रम सुनने के लिए पहुंचे, यह बड़ा आश्चर्यजनक रहा।

1 से 3 अप्रैल का कार्यक्रम ब्रिसबेन में रखा गया था। कार्यक्रम आर्य समाज स्थल पर रखा गया। मेरे ठहरने की व्यवस्था श्री सुकरमपाल सिंह जी के निवास पर की गई। इस परिवार ने एक परिवार के सदस्य के समान ही स्नेह व सम्मान व सुविधाएं प्रदान कीं, मैं उनका बहुत आभारी हूं। अब आर्य समाज के प्रति समर्पित व सक्रिय व्यक्ति हैं। सबको साथ लेकर चलते हैं।

पहला कार्यक्रम सायंकाल 6.30 से 9 बजे तक रखा गया। इसमें आर्य समाज के अतिरिक्त अन्य व्यक्ति भी सम्मिलित हुए, कार्यक्रम हुआ, पहले दिन ही सभी को बहुत अच्छा लगा। यहां तो सिडनी से भी अधिक रिस्पांस मिला। प्रत्येक श्रोता आनन्द विभोर हो रहा था। हर व्यक्ति आता और कहता यह पहला कार्यक्रम ऐसा हो रहा है, आज तक कभी ऐसा नहीं हुआ। कुछ पौराणिक बन्धु पूरे कार्यक्रम में उपस्थित हुए, यह आर्यजनों को विशेष सुखद लग रहा था। कार्यक्रम तीन दिन का था, किन्तु सदस्यों ने विचार करके उसे 5 दिन का करने का मुझसे आग्रह किया, मैंने स्वीकार किया और 1 से 5 अप्रैल तक ब्रिसबेन में कार्यक्रम हुआ। श्रोताओं में आर्य समाज के व गैर आर्य समाजी उपस्थित होते रहे, कुछ नए व्यक्ति आर्य समाज से जुड़े, उनसे पृथक से चर्चा की गई।

सारे श्रोता प्रसन्नता व एकाग्रता से सुनते रहे। प्रधान श्री जे. डी. हरिजी, राजेश जी, मूलचन्दजी, श्री सुकरमपाल जी व अनेक महिलाओं ने यहां तक कहा कि आज तक ऐसा आयोजन नहीं सुना और न कभी यहां हुआ। सभी पुन: कार्यक्रम के आयोजन की योजना बनावेंगे तथा कम से कम 7 से 10 दिन देने का आग्रह किया है। कुछ व्यक्ति मेलबर्न में कार्यक्रम सुनने हेतु आने का कह रहे थे।

निश्चित ही प्रचार प्रसार व सही निर्देशन की कमी रही है। उसी का परिणाम है छोटे से कार्यक्रम को भी इतना महत्व दिया जाता है। यह मेरे जैसे व्यक्ति के लिए कल्पना से ऊपर रहा।

मेलबर्न : मेलबर्न में 8 से 10 अप्रैल तक कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम 3 स्थानों पर अलग-अलग आयोजित किया गया। यहां के व्यक्तियों के लिए यह एक अलग प्रकार का प्रचार था। प्राय: कोई भी प्रचारक, वक्ता के रूप में या भजनों की प्रस्तुति के लिए आते रहे। मेरे द्वारा कुछ विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत करने के पश्चात् उसी से संबंधित भजनों की प्रस्तुति की जाती थी। संभवत: यही जन सामान्य को अच्छा लगा और उन्होंने इसे बहुत ही सराहा। कार्यक्रम में पौराणिकों की उपस्थिति भी अच्छी-खासी होती थी। अपनी सैद्धांतिक चर्चा के साथ ही रामायण गीता, महाभारत के भी उदाहरण प्रसंग अनुसार प्रस्तुत किए गए, बार-बार सत्य सनातन धर्म की चर्चा होती रही। इससे आर्य समाज के प्रति पौराणिकों का रुझान बढ़ा और 7 पौराणिक आर्य समाज से जुड़ने के लिए नाम और पता देकर गए। सनातन धर्म, रामायण मण्डल के अनेक सदस्यों ने कार्यक्रम के पश्चात् भेंट कर अत्यन्त सराहना व संतुष्टता व्यक्त की। आर्य समाज के सभी सदस्य बहुत उत्साहित दिखे तथा पुन: शीघ्र ऐसा ही आयोजन करने का आग्रह किया।

कार्यक्रम का प्रभाव इतना रहा कि सिडनी निवासी जिन्होंने सिडनी कार्यक्रम में भाग लिया वे मेलबर्न फिर कार्यक्रम में सम्मिलित होने आए।

अपने वर्षों के अनुभव व विभिन्न प्रचार कार्यक्रमों को देखने पर इस कार्यक्रम से आस्ट्रेलिया के आर्यजनों का उत्साह और भावी योजना को एक चेतना मिली, यह प्रतीत हुआ। बार-बार भारत की ओर से प्रयास होने पर सनातनधर्मी के एक सुदृढ़ संठन का निर्माण हो सकता है।

आर्य समाज सागरपुर के 36वें वार्षिकोत्सव पर

नव निर्मित सत्संग हॉल का उद्‌घाटन सम्पन्न

आर्य समाज सागरपुर दिल्ली के 36वे वार्षिकोत्सव पर 24 अप्रैल को नवनिर्मित हाल नं. 2 का उद्‌घाटन कार्यक्रम हुआ। जिसका शुभारम्भ यज्ञ से हुआ। पं. नन्दलाल निर्भय एवं श्री हरिदेव शास्त्री जी के प्रवचन हुए। उद्‌घाटन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में दि.आ.प्र. सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य, श्री सुरेन्द्र पाल सिंह, श्री सुरेश यादव, श्री सतपाल भरारा, श्री ओम प्रकाश आर्य, श्री शिव कुमार मदान, श्री विक्रम नरूला, श्री वीरेन्द्र सरदाना, श्री जगवीर सिंह, डॉ. मुकेश आर्य, श्री भगवान दास, श्रीमती वीना आर्या, श्रीमती उषा गुप्ता इत्यादि उपस्थित थे। हॉल नं. 2 के निर्माण में विशेष आर्थिक सहयोग देने वाले सभी दानदाताओं को प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिन्ह भेंट किये गये। समाज प्रधान श्रीमती विद्यावती आर्या ने सभी का धन्यवाद किया एवं कार्यक्रम का संचालन श्री सुखबीर सिंह आर्य ने किया। *- मानधाता सिंह आर्य, मन्त्री*

प्रथम पृष्ठ का शेष

यति ने कहा कि मातृ शक्ति पैर की जूती नहीं सर की पगड़ी है, नारी ज्ञानवान कला कुशलता वाली संतान व परिवार की निर्मात्री हो, ज्ञान विज्ञान से चमकने वाली लक्ष्मी हो, आर्य समाज एवम् वैदिक विचारधारा नारी सशक्तिकरण की पक्षधर है।

सम्मेलन की अध्यक्ष कन्या गुरुकुल की आचार्य डॉ प्रियंवदा जी वेद भारती ने कहा कि आज की आधुनिक नारी को अपनी सीमाओं मर्यादाओ को समझकर कर्त्तव्य क्षेत्र को पहचानने की जरुरत है आज स्वतंत्रता का स्थान स्वछन्दता ने ले लिया है वेद कहता है तू घर परिवार की सम्राज्ञी बन। इस अवसर पर 116 वर्षीय स्वामी सर्वानन्द जी जो विगत 90 वर्षो से अन्न नमक शकर का त्यागकर केवल गौ दुग्ध एवं फलाहार कर रहे हैं। स्वामी सर्वानन्द जी ने अब तक मॉरीशस, अफ्रीका, बर्मा के साथ सम्पूर्ण भारतवर्ष में अनेक राजनीतिज्ञों, न्यायाधीशों, गुरुकुलों के ब्रह्मचारियों, अध्यापकों, पुलिस अधिकारियों एवम् लाखों व्यक्तियों को योग प्राणायाम आसन सिखाते हैं यहां भी आसन एवं प्राणायम करके उपस्थित जन समुदाय को स्वास्थ्य एवं ईश्वर भक्ति के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

आर्यसमाज के प्रचारार्थ तैयार की गई विभिन्न योजनाएं एवं मोबाइल एप्प : आर्यजन लाभ उठाएं

MOBILE APP –
DOWNLOAD FROM PLAY STORE

आर्य लोकेटर (ARYA LOCATOR) – आर्य समाज की संस्थाओं को एक प्लेटफ़ॉर्म पर लाने के लिए और उनकी लोकेशन्स को गूगल पर लाने के लिए इस मोबाइल एप्लीकेशन का निर्माण किया गया है | यदि आपकी संस्था का अभी तक इसमें रजिस्ट्रेशन नहीं हैं तो कृपया अपनी संस्था को इसमें रजिस्टर करें |

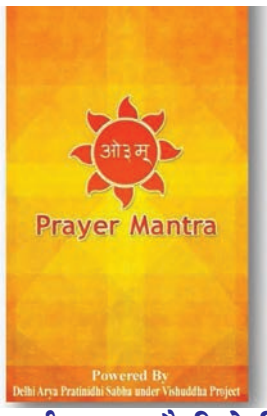

Prayer Mantra– प्रार्थना मन्त्र

आर्यसमाज द्वारा तैयार किया गया यह मोबाइल एप्प जी.पी.एस. के अनुसार कार्य करता है। इस एप्प में प्रात: जागरण मन्त्र, प्रात: सन्ध्या मन्त्र, सायं सन्ध्या मन्त्र, शयन मन्त्र, भोजन मन्त्र एवं गायत्री मन्त्र को सम्मिलित किया गया है। सभी मन्त्र सूर्योदय के अनुसार स्वत: संचालित होते हैं आप इन्हें अपनी सुविधानुसार सैट भी कर सकते हैं। आज ही गूगल प्ले स्टोर से डाउनलॉड करें।

आर्यसमाज मैट्रीमोनी

यह सेवा केवल आर्यसमाजी परिवारों में वैवाहिक रिश्ते बढ़ाने के उद्देश्य से सभा की वैबसाइट www.thearyasamaj.org पर आरम्भ की गई है। आप इस पर अपना/अपने बच्चों का पंजीकरण कराकर अपने सुयोग्य आर्य वर/वधु चयन कर सकते हैं। इस सेवा का उपयोग करने/पंजीकरण कराने के लिए आज ही लॉगऑन करें।

सत्यार्थ प्रकाश ऑडियो

यह मोबाइल एप्प भी सभा द्वारा तैयार किया गया है। इस एप्प के माध्यम से आप जब चाहें, जहां चाहें, जहां से चाहें अपनी सुविधा एवं आवश्यकता के अनुसार सत्यार्थ प्रकाश न केवल सुन सकते हैं अपितु साथ-साथ पढ़ भी सकते हैं। आज ही गूगल प्ले स्टोर से डाउनलॉड करें।

आर्य भजनावली

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्यसमाज के लिए यह एप्प तैयार किया गया है। इस एप्प को अपने मोबाइल में डाउनलोड करके आप जब चाहें आर्यसमाज के भजनों एवं गीतों का आनन्द ले सकते हैं। इस एप्प द्वारा आप आर्यवीर दल, ईश्वर भक्ति, वैदिक मन्त्र, मातृ-पितृ भक्ति, आर्यसमाज, देशभक्ति, दयानन्द गुनगान, वेद महिमा, आर्य महापुरुष गुणगान एवं मोबाइल रिंगटोन सुन सकते हैं तथा अपने किसी प्रेमी को भेज सकते हैं। आज ही गूगल प्ले स्टोर से डाउनलॉड करें।

ई-कामर्स

वेद, वैदिक साहित्य, प्रचार सामग्री एवं हवन कुण्ड, यज्ञ पात्र आदि सभी प्राप्त करने के लिए अब आप घर बैठे ऑन लाइन आर्डर कर सकते हैं। यह सुविधा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की वैबसाइट www.thearyasamaj.org पर आरम्भ की गई है। आप इस विभाग में क्लिक करके उपलब्ध साहित्य एवं प्रचार सामग्री अपनी इच्छा के अनुसार क्रय करने के लिए आर्डर कर सकते हैं। इंटरनेट बैंकिंग, क्रेडिट-डैबिट कार्ड या मनिआर्डर/चैक द्वारा भी आप भुगतान कर सकते हैं। कृपया इस सुविधा का लाभ अवश्य लें।

आर्यसमाज की सूचना व्हाट्स एप्प पर पाने हेतु

9540045898 पर अपना नाम एवम शहर का नाम SMS के माध्यम से दिए गए नंबर पर भेजें और इस नंबर को अपने मोबाइल में संरक्षित (SAVE) करें|

WhatsApp

आर्यसमाज वैबसाइट

www.thearyasamaj.org

सभा द्वारा तैयार कराई गई यह वैबसाइट सभा की न होकर पूरे आर्यसमाज की है। इस पर आप आर्यसमाज के कार्यो, आयोजन, कार्यक्रमों, समाचार, निर्वाचन, क्रिया, आदि की जानकारी एवं सूचना न केवल प्राप्त कर सकते हैं अपितु अपनी सूचना अपलोड भी कर सकते हैं। इसके अन्तर्गत ई-लाईब्रेरी, ब्लॉग, मैगजीन आदि अनेक पेज हैं जिनका आप लाभ उठा सकते हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेतृत्व में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में

आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेतृत्व में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन ए ब्लॉक जनकपुरी, नई दिल्ली में दिनांक 3 जुलाई 2016 को होना निश्चित हुआ है। आर्य परिवारों से अनुरोध है कि अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्रियों के आर्य परिवारों से संबंध जोड़ने के लिए परिचय सम्मेलन में शीघ्र-अतिशीघ्र पंजीकरण कराने का कष्ट करें।

पंजीकरण शुल्क मात्र 300 रुपये,

पंजीकरण फॉर्म सभा की वैबसाइट **www.thearyasamaj.org**

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

श्री अर्जुन देव चड्ढा, राष्ट्रीय संयोजक, मो. 9414187428

श्री एस.पी. सिंह, दिल्ली संयोजक, मो. 9540040324

ब्लॉग

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम से नवभारत टाइम्स, गूगल एवं जागरण समसामयिक विषयों पर ब्लॉग के माध्यम से लेख दिए जाते है।

ई-लाईब्रेरी

सभा की वैबसाइट पर ई-लाईब्रेरी का संचालन किया जाता है। आप अपनी पसन्द की पुस्तक को डाउनलोड करके पढ़ सकते हैं।

फेसबुक : सभा की ओर से 'आर्यसन्देश दिल्ली' के नाम से फेसबुक पेज का संचालन किया जाता है। आप एकाउंट के साथ मित्र बनें तथा लाईक एवं शेयर करके सभा के विचारों-सूचनाओं को प्रसारित करें। www. facebook.com/profile.php?id=100010262285384

प्रबुद्ध पाठकों, आर्यजनों एवं आर्यसमाजों/आर्य संस्थाओं के अधिकारियों से निवेदन है कि इस पृष्ठ की रंगीन फोटो प्रतियां कराकर अपने आर्यसमाज/संस्था नोटिस बोर्ड पर लगाएं, अपने मित्रों एवं जानकारों को सूचनार्थ अवश्य दें।

Glimpses of the Atharva Veda

- Priyavrata Das

Continue from last issue :-

Remedy of Snake Poison

The entire hymn V.15 containing 11 verses is associated with the treatment of sanke poison. Peculiar names of snakes have been given in three verses of this hymn. All the snakes are not venomous. Mostly the fear or panic of possible danger makes the injured sick. A trained physician is supposed to utter these words with devotional sympathy for the treatment of the patient.

"Powerful is my voice like thunder of the cloud. With formidable words, I drive it away for you from you. I have seized that power of his with me. May he raise himself like the sun out of darkness."

"With eye, I countidote of snake poison called Tabuva and Tastuva find place in the hymn.

वृषा में रवो नभसा न तन्यतुरुग्रेण ते वचसा बाध आदु ते। अहं तमस्य नृभिरग्रभं रसं तमस इव ज्योतिरुदेतु सूर्यः।।(Av.v.13.3)

Vrsa me ravo nabhasa na tanyaturugrena te vacasa badha adu te.

aham tamasya nrbhiragrabham rasam tamas eva jyotirudetu soryah.

चक्षुषा ते चक्षुर्हन्मि विषेण हन्मि ते विषम्। अहे मृियस्व मा जीवीः प्रत्यगभ्येतु त्वा विषम्।।(Av.v.13.4)

Cakusa te caksurhanmi visena hanmi te visam. ahe mriyasva ma jivih pratyagabhyetu tva visam..

Apamarga - A Herb of General Healing

Hymns 17-19 of Chapter IV of Atharva Veda are devoted to the herb Apamarga and the cures rendered by it. The word Apamarga means that which cleanses and wipes out. The plant is identified as 'auchyranthes aspera' by some scholars.

"Let Apamarga sweep away chronic diseases and every curse; sweep the black magic terrors, clean away all malignant, stingy witchcraft."

"Unpleasant dreams, unwholesome living, germs of diseases, epidemic and ugly hags, all these evil-named and evil-voiced, we drive away from us."

The herb is glorified as the queen of healing remedies (IV.17.1), sovereign of all plants (IV. 17.8) and an army of archers (IV. 19.2).

अपामार्गो प मार्ष्टु क्षेत्रियं शपथश्च यः। अपाह यातुधानीरप सर्वा अराय्यः।। (Av.iv.18.7)

Apamargo pa marstu ksetriyam sapathasca yah.

apaha yatudhanirapa sarva arayyah..

दौष्वप्न्यं दौर्जीवित्यं रक्षो अभ्वमराय्यः। दुर्णाम्नीः सर्वा दुर्वाचस्ता अस्मन्नाशया मसि।। (Av.iv.17.5)

Dausvapnyam daurjivityam rakso abvamarayah.

dumamni sarva durvacasta asmannasayamasi..

Rajani,Curer of Leprosy

Chapter I, hymns 23 and 24, indicate cure of leprosy by a plant called Rajani which is to be pulled out from earth.

"Night born, you are, O herb, dusky, cloudy and black in hue.O Rajani, the colour-imparting shade, do recolour the ashy spots, the leprosy and leucoderma."

"Darkness is your place of repose and dark is your dwelling space. O herb, you yourself are dusky. May you make every spot disappear from this place and make the skin uniform. May the man become natural in appearance."

नक्तञ्जातास्योषधे रामे कृष्णे असिक्ति च इदं रजनि रजय किलासं पलितं च यत्।। (Av.i.23.1)

Naktanjatasyosadhe rame krsne asikti cha. idam rajani rajaya kilasam palitam cha yat.

असितं ते प्रलयनमास्थानमसितं तव। असिक्यस्योषधे निरितो नाशया पृषत्।। (Av.i.23.3)

Asitam te pralayanamasthana masitam tava. asikyasiosadhe nirito nasaya prsat.

To be Continued.....

आओ संस्कृत सीखें

संस्कृत का परिचय

संस्कृत या संस्कृतम् देवों की भाषा है इसका दूसरा नाम देव वाणी भी है। यह दुनियाँ की प्राचीनतम् भाषाओं मे से एक है और एक समय यह भारत की मूल मात्र भाषा थी। यह देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। संस्कृत बहुत ही प्रवाहशील और सहज भाषा है। इसी भाषा में हमारे सारे ग्रंथ जैसे श्रीमद्भगवद्गीता, रामायण, महाभारत, वेद और पुराण लिखे हैं। बौद्ध धर्म (विशेषकर महायान) तथा जैन धर्म के भी कई महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ भी संस्कृत में ही लिखे गये हैं। संस्कृत संरचनापूर्वक सबसे शुद्ध और दोष रहित भाषा है।

संस्कृत बहुत सी भाषाओं की जननी है। आधुनिक भारतीय भाषाएँ जैसे हिन्दी, उर्दू, कश्मीरी, उड़िया, बांगला, मराठी, सिन्धी, पंजाबी, नेपाली, आदि इसी से उत्पन्न हुई हैं। इन सभी भाषाओं में यूरोपीय बंजारों की रोमानी भाषा भी शामिल है।

अब हम संस्कृत शब्द को तोड़ कर देखते हैं, संम्-स्कृत (सम - जोड़ना, कृत - करना)। अगर आप संस्कृत के ज्ञाता हैं तो आप जानते होंगे कि धातु के आगे और पीछे (उपसर्ग और प्रत्यय) शब्द या अक्षर लगने से संस्कृत में अनेकों अनेक शब्दों या वाक्यों की रचना की जा सकती है।

संस्कृत की रमणीयता और सहजता अतुल्य है। हमारा यह छोटा सा प्रयास रहेगा कि हम संस्कृत, हमारे ग्रथ और संस्कृति को समाज तक पहुँचा सकें। जो गौरव हमारे हृदय से अपनी मातृभाषा और संस्कृति को लेकर लुप्त हो गया है उसे फिर से जागृत कर सकें।

संस्कृत वर्णमाला : हम हिन्दी की वर्णमाला से शुरुआत करते हैं। हिन्दी की वर्णमाला को पूरी तरह से जानना आवश्यक है। आजकल ज्यादा तर विद्यालयों में पूरी वर्णमाला नहीं सिखाई जाती, कुछ अक्षर छोड़ दिए जाते हैं। हिन्दी वर्णमाला स्वर और व्यंञ्जन से मिलकर बनी है।

स्वर : स्वर अपने आप में पूरे होते हैं। उन्हें उच्चारण करने के लिए किसी और अक्षर की जरूरत नहीं होती। हिन्दी वर्णमाला में 16 स्वर हैं - अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः

व्यंञ्जन : व्यंञ्जन अपने आप में पूरे नहीं होते। उनके उच्चारण के लिए स्वर की आवश्यकता होती है। हिन्दी वर्णमाला में 35 व्यंञ्जन हैं। जैसे- क = क् +अ (अ से मिलकर पूरा क बनता है)

कण्ठय (Gutturals) क् ख् ग् घ् ङ्
तालव्य (Palatals) च् छ् ज् झ् ञ्
मूर्धन्य (Linguals) ट् ठ् ड् ढ् ण्
दन्तय (Dentals) त् थ् द् ध् न्
ओष्ठय (Labials) प् फ् ब् भ् म्
अन्तःस्थ (Semi Vowel) य् र् ल् व्
ऊष्म (Sibilant) श् ष् स् ह्
इसके इलावा 3 प्रकार के ॐ होते हैं।

संख्याएँ - 0 1 2 3 4 5 6 7 8 9
० १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९

अनुस्वार - अं अनुस्वार को म् की जगह प्रयोग में लाया जाता है। जैसे अहं या अहम्।

विसर्ग - **अः** विसर्ग का उच्चारण कैसे करें। विसर्ग (अः) उससे पहले अक्षर की मात्रा की तरह बोला जाता है। रामः शब्द में विसर्ग म् के बाद आता है और म शब्द म् और अ की मात्रा से मिलकर बना है। इसलिए ह के बाद अ की मात्रा लगाएँ। तो रामः का उच्चारण रामह होगा। नीचे दिए गए उदाहरणों को देखें।

शब्द *उच्चारण* रामः रामह, रामाः रामाहा, हरिः हरिहि, गुरुः गुरुहु

हलन्त् - जब भी हलन्त् किसी अक्षर के नीचे लगता है तो उस अक्षर के उच्चारण की सीमा आधी कर देनी चाहिए। जैसे कप् (Cup) कप ।

मात्रा - अब हम स्वर सम्बन्धी मात्राओं को देखेंगे। स्वरों की मात्रा व्यंञ्जनों पर उपयोग की जाती है। (अगर रोज-मर्रा की भाषा में बोलें तो व्यंञ्जनों के उच्चारण बदलने के लिए उपयोग में लाई जाती है।)

स्वर अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ उदाहरण क का कि की कु क कू कृ के कै को कौ

संयुक्त व्यंञ्जन - संयुक्त व्यंञ्जन दो या दो से अधिक व्यंञ्जन से मिलकर बनते हैं। नीचे दिए गए उदाहरणों को देखें।

क्ष=क्+ष, क्त=क्+त, ग्र=ग+र्, श्र=श्+र, य=ह्+य, हम=ह्+म

- क्रमशः

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय

व्यावहारिक संस्कृत शिक्षण कक्षा

दिनांक : 8 मई 2016 से प्रति रविवार सायं 5 से 7 बजे
स्थान : गुरुविरजानन्द संस्कृतकुलम, आर्यसमाज आनन्द विहार, एल ब्लॉक हरी नगर, नई दिल्ली-110064
सम्पर्क: महेन्द्र सिंह आर्य, मन्त्री आर्यसमाज (9650183184)

प्रशिक्षण उपरान्त सभी प्रशिक्षुओं को प्रमाण पत्र प्रदान किए जाएंगे।

समस्त विद्यालयों एवं विद्यार्थियों को वार्षिक परीक्षा के उत्कृष्ट परिणामों हेतु हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा
समस्त विद्यालयों/आर्य शिक्षण संस्थाओं हेतु प्रकाशित

नैतिक शिक्षा की पुस्तकें

नर्सरी से 12वीं कक्षा तक

आकर्षक छूट 25%

बेहतरीन कागज पर आकर्षक छपाई में तैयार कराई गई नैतिक शिक्षा की पुस्तकें छात्रों के नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक ज्ञान तथा राष्ट्रीय भावना जागृत करने वाली हैं। ये पुस्तकें दिल्ली के समस्त विद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं के साथ-साथ दिल्ली से बाहर अन्य प्रदेशों के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी नर्सरी से कक्षा 12वीं तक लागू हैं। अपने विद्यालय/शिक्षण संस्था के लिए आवश्यकतानुसार मंगवाने के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001
☎ : 23360150; Email : aryasabha@yahoo.com

सार्वदेशिक आर्य वीर दल का राष्ट्रीय शिविर
दिनांक 5 जून 2016 से 19 जून 2016

स्थान : एस.एम.आर्य पब्लिक स्कूल, आर्य समाज पंजाबी बाग वैस्ट, दिल्ली-26

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में सार्वदेशिक आर्य वीर दल द्वारा आयोजित राष्ट्रीय शिविर में शाखानायक, उपव्यायाम शिक्षक, व्यायाम शिक्षक श्रेणी के शारीरिक एवं बौद्धिक पाठ्यक्रम का प्रशिक्षण योग्य शिक्षकों द्वारा दिया जायेगा। शिविर में दशम कक्षा उत्तीर्ण आर्य वीर ही प्रवेश प्राप्त कर सकेंगे।

प्रवेश शुल्क: शाखानायक 300/-, उपव्यायाम शिक्षक, व्यायाम शिक्षक 500/- शिविरार्थी को पाठ्य पुस्तकें शिविर की ओर से दी जायेंगी।

आवश्यक सामान : गणवेश-खाकी हाफ पैण्ट, सफेद सैण्डो बनियान, सफेद जूते, सफेद मोजे, लंगोट, लाठी, नोटबुक, हल्का बिस्तर, थाली, चम्मच, गिलास एवं अन्य दैनिक उपयोगी सामान।

नोट : शिविरार्थी स्थानीय आर्य समाज या आर्य वीर दल के अधिकारी का संस्तुति पत्र अथवा आर्य वीर दल के प्रशिक्षण का प्रमाण पत्र और अपने दो चित्र साथ लाएं। शिविर में उन्हें ही प्रवेश दिया जायेगा जो आर्य वीर दल की शाखा में जाते हैं अथवा जिन्होंने आर्य वीर प्रथम श्रेणी का प्रशिक्षण प्राप्त किया है।

-: निवेदक :-

धर्मपाल आर्य	सत्यवीर आर्य	स्वामी देवव्रत	सत्यानन्द आर्य	अरविन्द नागपाल
प्रधान	महामन्त्री	प्र. संचालक	प्रधान	प्रबन्धक
दि.आ.प्र.सभा	सार्वदेशिक आर्य वीर दल		एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल	

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का शिविर जम्मू में
दिनांक 5 जून से 12 जून 2016

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का वार्षिक राष्ट्रीय शिविर इस बार जम्मू शहर में 5 से 12 जून 2016 तक लगाया जाएगा। इसमें भाग लेने के लिए 14 वर्ष से अधिक आयु की वे वीरांगनाएं जिन्होंने पहले भी कम-से-कम दो शिविरों में भाग लिया हो, आ सकती हैं। दिनांक 15 मई 2016 तक अपने नाम निम्नलिखित नम्बरों पर दे दें ताकि व्यवस्था सुचारु रूप से हो सके।

साध्वी डॉ. उत्तमा यति	मृदुला चौहान	आरती खुराना	विमला मलिक
प्रधान संचालिका	संचालिका	सचिव	कोषाध्यक्षा
96722-86863	98107-02760	99102-34595	98102-74318

आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रान्तीय प्रशिक्षण शिविर
दिनांक 22 से 29 मई 2016

आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश के तत्त्वावधान में चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर हंसराज मॉडल स्कूल पंजाबी बाग, नई दिल्ली में 22 से 29 मई, 2016 तक लगाया जाएगा। आप समस्त आर्यसमाजों से निवेदन है कि अपने यहां आने वाली वीरांगनाओं को तथा अपने परिवार की बच्चियों को भाग लेने के लिए अवश्य भेजें। सम्पर्क करें- *ब्र. सुमेधा आर्या* *श्रीमती शारदा आर्या*, संचालिका मो. 9971447372

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के तत्त्वावधान में

35वां वैचारिक क्रान्ति शिविर
19 मई, 2016 से 29 मई, 2016

उद्घाटन समारोह	समापन समारोह
22 मई प्रात: 10 बजे	29 मई प्रात: 10 बजे

स्थान : आर्यसमाज रानी बाग, मेन बाजार, दिल्ली-110034

आर्यजन दोनों कार्यक्रमों में अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर देश के विभिन्न आदिवासी क्षेत्रों से पधारे कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन करें।

निवेदक	महाशय धर्मपाल	धर्मपाल गुप्ता	जोगेन्द्र खट्टर	योगेश आर्य
	प्रधान	व.उ. प्रधान	महामन्त्री (9810040982)	कोषाध्यक्ष

वर चाहिए

25 वर्ष, 5'2'', बी टेक (कम्प्यूटर साइंस), एम बी ए (इनफोर्मेशन सिस्टम), राजावत क्षत्रिय, झाँसी (उ. प्र.) के आर्य परिवार की सुन्दर, सौम्य, धार्मिक, सरल, मंगली कन्या के लिये सुयोग्य वर की आवश्यकता है। इच्छुक आर्य परिवार संपर्क करें- ***आर्य जसवन्त सिंह ठाकुर* मो. 09452906568,**

Email : jaswantthakur2401@gmail.com

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज राजनगर-2, पालम कालोनी नई दिल्ली

प्रधान - श्री कर्मबीर सिंह आर्य
मंत्री - श्री रतन आर्य
कोषाध्यक्ष - श्री भगत सिंह राठी

आर्य समाज रामनगर, रुड़की

प्रधान - श्री रामेश्वर प्रसाद सैनी
मन्त्री - अरविन्द मिनोचा
कोषाध्यक्ष - जे.डी. त्यागी

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

सत्यार्थ प्रकाश स्वाध्याय शिविर
30 मई से 5 जून 2016

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं गुरुकुल पौंधा देहरादून के संयुक्त तत्त्वावधान में पूर्व वर्षों की भांति इस वर्ष भी सत्यार्थ प्रकाश स्वाध्याय शिविर इस वर्ष भी आयोजित किया जा रहा है। जाने वाले शिविरार्थी 29 मई सायं 9 बजे आई.एस.बी.टी. कश्मीरी गेट दिल्ली से प्रस्थान करेंगे तथा 5 जून 2016 को सायं 3 बजे दिल्ली के लिए वापस रवाना होंगे। जो शिविरार्थी ट्रेन से जाना चाहें अपनी सुविधानुसार रेलवे आरक्षण स्वयं करवा लें। शिविर शुल्क प्रति शिविरार्थी 1100/- देय होगा। जिसमें आने-जाने का मार्ग व्यय (सामान्य बस द्वारा) सम्मिलित है। शिविर में जाने वाले शिविरार्थी अपना शुल्क यथाशीघ्र सभा कार्यालय 15 हनुमान रोड, दिल्ली-01 में जमा करवा दें। ***- सुखवीर सिंह आर्य, संयोजक, मो. 09540012175, 09350502175***

पक्षियों को पहुंचाई राहत

13 अप्रैल 2016 को भीषण गर्मी से पक्षियों को राहत पहुंचाने के उद्देश्य से आर्य समाज रेलवे कॉलोनी कोटा ने पक्षियों हेतु मिट्टी के परिण्डे बांधे है जिनमें रोज जल भरने की व्यवस्था श्रीमती उषा शर्मा को दी गई। परिण्डे जिला आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा उपलब्ध कराये गये हैं। इस अवसर पर जिला सभा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा, आर्य समाज रेलवे कॉलोनी के प्रधान हरिदत्त शर्मा, प्रेम सिंह परिहार, श्रीमती उषा शर्मा, श्री अमन चड्ढा व अन्य कार्यकर्त्ता उपस्थित थे।

- मन्त्री

आर्य समाज पटियाला का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज मन्दिर, चौक आर्य समाज, पटियाला का वार्षिकोत्सव एवं सामवेद पारायण महायज्ञ 12से 17 अप्रैल 2016 के मध्य सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर वरिष्ठ साहित्यकार एवं वैदिक प्रवक्ता महात्मा चैतन्य मुनि जी मुख्य प्रवक्ता एवं यज्ञ ब्रह्मा थे। उनके सहयोगी के रूप में वेदपाठी ब्रह्मचारी धर्मेन्द्र जी और शिव कुमार जी भी पधारे।

-वेद प्रकाश तुली, मंत्री

शोक समाचार

श्री दयानन्द आर्य को पितृशोक

आर्यसमाज भीलवाड़ा राजस्थान के वरिष्ठ सदस्य, अधिकारी, स्वतन्त्रता सेनानी आर्यवीर मेवाड़ी के नाम से प्रसिद्ध श्री घनश्याम आर्य जी का 95 वर्ष की आयु में भीलवाड़ा में दिनांक 30 अप्रैल, 2016 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के किया गया।

प्रो. बलराज मधोक का निधन

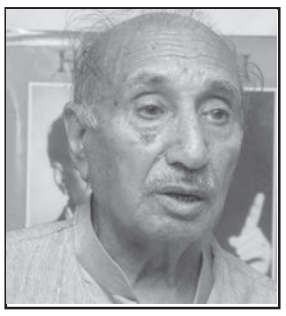

जनसंघ के संस्थापक, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के कार्यकर्ता एवं आर्यसमाज से घनिष्ठ सम्बन्ध रखने वाले प्रो. बलराज मधोक जी का दिनांक 2 मई, 2016 को प्रात: 9 बजे उनके दिल्ली आवास पर निधन हो गया। वे 96 वर्ष के थे। उनका जन्म 25 फरवरी, 1920 को जम्मू-कश्मीर के स्कार्दू गिलगित क्षेत्र में हुआ था। उन्होंने अपने विद्यार्थी जीवन में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की भी स्थापना की। वे आर्यजगत् में एक राष्ट्रवादी लेखक एवं नेता के रूप में जाने जाते हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु. प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु. प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.	प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 2 मई से रविवार 8 मई, 2016

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 5/6 मई, 2016

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 4 मई, 2016

प्रथम पृष्ठ का शेष

आखिर वैदिक सिद्धान्त मानना ...

ताजिकिस्तान ने यह फैसला लेते हुए माना है कि सजातीय (Consanguineous) विवाह से पैदा होने वाले बच्चों में आनुवांशिक रोग होने की संभावनाएं ज्यादा होती हैं। यहां के स्वास्थ्य विभाग ने 25 हजार से ज्यादा विकलांग बच्चों का पंजीकरण और उनका अध्ययन करने के बाद बताया है कि इनमें से लगभग 35 प्रतिशत बच्चे ऐसे हैं जो सजातीय विवाह से पैदा हुए हैं। सजातीय विवाह से पैदा होने वाले बच्चों में आनुवांशिक रोग होने की संभावनाओं पर लम्बे समय से चर्चा होती रही है. लेकिन यह चर्चा कभी भी इतने व्यापक स्तर पर नहीं हुई कि इस तरह के विवाहों पर प्रतिबंध लग सके, अभी हाल ही में 11 अप्रैल को अपने पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान से खबर आई थी कि लगभग 70 प्रतिशत पाकिस्तानी अपने घर परिवार में ही शादी करते हैं यानि कि भाई ही अपनी बहनों के पति है। सुनने में थोड़ा अटपटा सा लग सकता है किन्तु पाकिस्तान में इस तरह भाई बहनों के बीच शादियाँ कोई बड़ी बात नहीं है। ये बहनें चाचा, मामा आदि की बेटियां होती हैं लेकिन भाई बहनों से शादी के कारण पाकिस्तान में जो नये बच्चे पैदा हो रहे है वे अजीब बीमारियों का शिकार हैं। जबकि इन बीमारियों से चिकित्सकीय जाँच से रूबरू होने के बाद कई यूरोपीय देशों ने इस तरह की शादियों पर प्रतिबंध लगा दिए हैं।

हमें इस खबर में इसलिए दिलचस्पी जागी कि यूरोप के वैज्ञानिक आज इस दावे को साबित कर अपनी पीठ थपथपा रहे हैं। जबकि इस विवाह पद्धति को हमारे ऋषि मुनि सृष्टि के आरम्भ में ही वेदों में लिख गये थे, ऋग्वेद में लिखा है ''संलक्षमा यदा विषु रूपा भवाती' अर्थात् सहोदर बहन से पीड़ा प्रदय संतान उत्पन्न होने की सम्भावना होती है।'' एक ही परिवार, गोत्र में विवाह भारतीय हिन्दू संस्कृति में हमेशा एक विवाद का विषय रहा है।

मीडिया इसे प्रेम पर पहरा व खाप (पंचायत) के तालिबानी फरमान के तौर पर पेश करता है। जिस कारण आज नयी और पुरानी पीढ़ी के बीच टकराव का कारण बना है। सामाजिक और वैदिक दृष्टि से सगोत्र व कन्सेंग्युनियस विवाह अनुचित है क्योंकि एक ही गोत्र में जन्मे स्त्री व पुरुष को बहन व भाई का दर्जा दिया जाता है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण इस पक्ष में है कि बहन-भाई के रिश्ते में विवाह सम्बन्ध करना अनुचित है। वैज्ञानिकों का मत है कि यदि स्त्री व पुरुष का खून का सम्बन्ध बहुत नजदीकी है तो आनुवांशिकी दोषों एवं बीमारियों का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में जाना सम्भव है। स्त्री व पुरुष में खून का सम्बन्ध जितना दूर का होगा उतनी ही आनुवांशिक दोषों की कम सम्भावना होगी। आनुवांशिकी दोषों एवं बीमारियों का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में जाने से बचने की यह वैदिक और वैज्ञानिक विधि है। शायद भारत के ऋषि मुनि वैज्ञानिक भी थे जिन्होंने बिना यंत्रों के ही यह सब जान लिया था तथा यह नियम बना दिया था कन्सेंग्युनियस विवाह मतलब खून का सम्बन्ध जितना दूर का होगा संतान उतनी ही वीर, पराक्रमी और निरोगी होगी। दूसरे शब्दों में कहें तो पैदा होने वाले बच्चे उतने ही स्वस्थ व बुद्धिमान होंगे। कन्सेंग्युनियस विवाह अनुचित ही नहीं परिवार का अंत करने वाला कदम होता है नयी पीढ़ी को इसे समझना चाहिए। जिस तरह आज ताजिकिस्तान ने कन्सेंग्युनियस विवाह पर रोक लगाई उससे पूरे विश्व को सबक लेना चाहिए खासकर भारतीय मुस्लिम समाज को तो इससे प्रेरणा लेनी ही चाहिए? अन्य समाज को भी सोचना चाहिए आज का विज्ञान हमारे कल के वेदों से ऊपर नहीं है। -*राजीव चौधरी*

प्रतिष्ठा में,

स्वास्थ्य चर्चा

गर्मी के मौसम में बच्चों की देखभाल

गर्मी के मौसम में छोटे बच्चों के स्वास्थ्य के प्रति अधिक सचेत रहने की आवश्यकता होती है। गर्मी के कारण बच्चों को उल्टी, दस्त, बार-बार प्यास लगना आदि की अक्सर शिकायत हो जाती है। आइए जानते हैं, बच्चों से सम्बन्धित छोटी-मोटी बीमारियों के घरेलू इलाज। **अधिक प्यास लगने पर:** एक गिलास पानी में एक चुटकी नमक घोलकर एक-एक चम्मच थोड़ी-थोड़ी देर में पिलाते रहें।

आंख का नीलापन : रीठे के छिलके को जला कर तेल जैतून में मिलाकर सिर पर मालिस करें। नीलापन दूर हो जाएगा। **उल्टी, दस्त, हैजा होने पर :** 1. जहर मोहरा, नारियल दरयाई, चंदन सफेद 5-5 ग्राम को कूट छान कर आधा ग्राम दवा गुलाब जल से दें। 2. अजवायन आधा चुटकी पिसी हुई मां के दूध में मिलाकर दें। 3. सोंठ, अतीस, नागर मोथा, सुगंध वाला, इन्द्र जौ 5-5 ग्राम दरदरा कूट 200 ग्राम पानी में उबालें एक चौथाई रह जाने पर उतार कर ठंडा कर छान लें। छोटी आधी चम्मच में एक चम्मच पानी मिलाकर प्रात: दें।

पतले दस्त होने पर: मोचरस पिसी 2-2 रत्ती दवा दही में मिलाकर 2-3 घण्टे बाद दें।

कब्ज होने पर : 1. अरण्डी का तेल दो से चार बूंद मां के दूध में मिलाकर दें। 2. पेट पर अरण्डी के तेल की आहिस्ता-आहिस्ता मालिश करें।

कान में कीड़े होने पर : 1. बनतुलसी के पत्तों का रस एक-एक बूंद डालें। 2. मकोऐ के पत्तों का रस एक-एक बूंद डालें।

कान में दर्द होने पर : 1. प्याज के रस को गुनगुना करके दो-दो बूंदें कानों में डालें। 2. तिल के तेल को गुनगुना करके दो-दो बूंद कानों में डालें। 3. मकोए के पत्तों के रस में रसोत मिलाकर गुनगुना करके दो-दो बूंद कान में डालें। 4. पीप बहते कान को पहले नीम के पानी से साफ करें। फिर फिटकरी और माजूफल पांच-पांच ग्राम पीस कपड़छन कर एक-एक रत्ती शहद में मिलाकर एक-एक बूंद दोनों कानों में डालें।

पेट का अफारा : सेंधा नमक, सोंठ, छोटी इलायची दाना, हींग भुनी, भारंगी 5-5 ग्राम कूट छान कर 2 रत्ती दवा गर्म पानी से प्रात:-सायं दें।

वैद्य खेम भाई द्वारा रचित ''चिकित्सा सम्राट आयुर्वेद'' पुस्तक से साभार। यह पुस्तक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वैदिक प्रकाशन विभाग में उपलब्ध है। अपना आदेश मो. 09540040339 पर या सीधे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय 15 हनुमान रोड दिल्ली -110001 के पते पर भेज सकते हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह